RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 75, अंक : 3 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 1 अप्रैल, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

31 MAR 2018

वर्ष–75, अंक : 3, 29 मार्च–1 अप्रैल 2018 तदनुसार 19 चैत्र सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

विद्वानों की महिमा

ले०–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

क्रतूयन्ति क्रतवो हृत्सु धीतयो वेनन्ति वेनाः पतयन्त्या दिशः।
न मर्डिता विद्यते अन्य एभ्यो देवेषु मे अधि कामा अयंसत।।
–ऋ. १० ।६४।२

शब्दार्थ–क्रतवः = क्रतुशील= कर्मशील महात्मा **क्रतूयन्ति** = कर्म करते हैं **हृत्सु** = हृदयों में **धीतयः** = ध्यान करते हैं **वेनाः** = महाबुद्धिमान्, कान्तिमान् **वेनन्ति** = बुद्धि–कान्ति का आचरण करते हैं **आ + दिशः** = आदेश करने वालों को **पतयन्ति** = गिराते हैं। **एभ्यः** = इनसे **अन्यः** = भिन्न दूसरा कोई **मर्डिता** = सुखदाता **न** = नहीं **विद्यते** = है, अतः **मे** = मेरे **कामाः** = मनोरथ **देवेषु+अधि** = देवों में ही **अयंसत** = रुके हैं, नियन्त्रित हैं।

व्याख्या–इस मन्त्र में अत्यन्त संक्षेप से विद्वानों का महत्त्व बताया गया है–

१. क्रतूयन्ति क्रतवः–वे क्रतु= कर्मशील होते हैं और कर्म करना ही पसन्द करते हैं। विद्वानों के सम्बन्ध में मुण्डकोपनिषत् [३ ।१ ।४] में कहा है– **'विजानन् विद्वान् भवते नातिवादी। आत्मक्रीड आत्मरतिः क्रियावानेष ब्रह्मविदां वरिष्ठः'** = समझदार विद्वान् बहुत नहीं बोलता, आत्मा में ही खेलता और आत्मा से प्रीति करता है और यह ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ **क्रियावान्** होता है, अर्थात् विद्वान् के लिए क्रिया= कर्म अत्यन्त आवश्यक है। जब ब्रह्मज्ञानियों में उत्तम विज्ञानी विद्वान् क्रियावान् होता है तो साधारणजनों को तो अवश्य ही क्रियामय होना चाहिए। वेद में भी इसी आशय से कहा है–**'ते हि देवस्य सवितः सवीमनि क्रतुं सचन्ते सचितः सचेतसः'** [ऋ० १० ।६४ ।७] = वे समझ–बूझ वाले सुचेत मनुष्य सविता परमात्मा के निर्देश में रहते हुए कर्म का सेवन करते हैं। विद्वान् का आदर्श भगवान् है। वह जब सतत क्रियाशील है तो उसका अनुकरण करने के अभिलाषी कैसे अकर्मा रह सकते हैं ? अकर्मा को वेद में दस्यु कहा है। भगवान् के विज्ञानी विद्वान् दस्यु नहीं बनेंगे।

२. हृत्सु धीतयः–दिलों में ध्यान करते हैं, अर्थात् धारणा–ध्यान का अभ्यास करते हैं।

३. वेनन्ति वेनाः–उनके आचारों से बुद्धि और क्रान्ति की स्पष्ट झलक मिलती है। उनके सारे कर्म ज्ञान और बुद्धि का परिचय देते हैं, इसके कारण उनमें विशेष क्रान्ति झलकती है।

४. पतयन्त्यादिशः–अन्यायी आदेशकर्त्ताओं को गिरा देते हैं। कर्म, ज्ञान और बुद्धि का फल है। सदसद्विवेक, न्याय–अन्याय का ज्ञान। विद्वान् भरसक अन्याय, अत्याचार का विरोध करते हैं।

५. न मर्डिता विद्यते अन्य एभ्यः–इनके बिना अन्य कोई मनुष्य सुखदाता नहीं है। जो कर्मठ, ज्ञानी और बुद्धिमान् हैं, साथ ही अन्याय के विरोधी हैं, उनसे बढ़कर और कौन मनुष्यजाति का हितकारी हो सकता है? विद्वानों की यही कामना रहती है–**'सदा देवास इवया सचेमहि'** [ऋ० १० ।६४ ।११] हम विद्वान् सदा ज्ञान और वाणी से युक्त रहें, अर्थात् हम वाणी का प्रयोग सदा अपने ज्ञान के अनुसार करें। कैसी कमनीय कामना है ! विद्वानों के इन गुणों से मोहित होने के कारण **'देवेष्वधि मे कामा अयंसत'** = देवों में मेरे मनोरथ रुके हैं, अर्थात् मैं भी देव= विद्वान् बनना चाहता हूँ।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों के पदाधिकारियों की सेवा में

मान्य महोदय,

सादर नमस्ते

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक दिनांक 24 मार्च 2018 को प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की अध्यक्षता में सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर में हुई। इस मीटिंग में पंजाब विश्वविद्यालय में यू.जी. सी. द्वारा स्थापित दयानन्द चेयर को संस्कृत विभाग में विलय करने के निर्णय पर चर्चा की गई। इस बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब विश्वविद्यालय के इस निर्णय से सहमत नहीं है और दयानन्द चेयर का विलय संस्कृत विभाग में नहीं करने देगी। महर्षि दयानन्द ने शिक्षा के क्षेत्र में जो योगदान दिया है उसे भुलाया नहीं जा सकता। इसलिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा ने निर्णय लिया है कि 16 अप्रैल 2018 को पूरे पंजाब में सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधि अपने–अपने जिले के जिलाधीशों को एक ज्ञापन देंगे और रोष व्यक्त करेंगे तथा उसकी प्रतिलिपि विश्वविद्यालय के कुलपति तथा कुलाधिपति को भेजी जाएगी। दयानन्द चेयर के संस्कृत विभाग में विलय का निर्णय आर्य समाज की भावनाओं के साथ खिलवाड़ है और आर्य समाज इसे कतई बर्दाशत नहीं करेगा।

इसके साथ ही आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक में भी इस विषय को पुरजोर ढंग से उठाया और वहां पधारे प्रतिनिधियों से आग्रह किया कि वह अपने अपने राज्यों में जाकर विश्वविद्यालय के कुलपति और कुलाधिपति को एक ज्ञापन भेजें। आशा है आप अपने संगठन का परिचय देते हुये जिला की सभी आर्य समाजें संगठित होकर 16 अप्रैल 2018 को अपने अपने जिला में एक रैली निकाल कर जिलाधीश को ज्ञापन देंगे।

धन्यवाद सहित

भवदीय,
प्रेम भारद्वाज
सभा महामंत्री

अथर्ववेद में विवाह तथा गृहस्थ्य

ले. डॉ. प्रतिभा असिस्टैण्ट् प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय

अथर्ववेद में विवाह का सुव्यवस्थित विस्तृत स्वरूप वर्णित है। वाग्दान, बन्धुजनों आदि की सहमति, विवाह से पूर्व स्नान वस्त्रप्रदान, पाणिग्रहण, अश्मारोहण, अग्निप्रदक्षिणा, लाजाहोम, दहेज, विदाई, परिवारजनों के आशीर्वाद, विदाई के बाद वरवधू का सुसज्जित रथ आदि सभी का सुन्दर आलङ्कारिक चित्रण के साथ-साथ यहाँ आदर्श गृहस्थाश्रम की भी उत्तम परिकल्पना प्राप्त होती है।

चतुर्दशकाण्ड में सोम तथा सूर्या के विवाह के माध्यम से विवाह के कई महत्त्वपूर्ण तथ्य उजागर होते हैं।

वाग्दान तथा बन्धुजनों की सहमतिः

अश्विदेव सचिता के पास उनकी पुत्री सूर्या के साथ सोम के विवाह का प्रस्ताव लेकर जाते है-

यदश्विना पृच्छमानवयातं त्रिचक्रेण वहतुं सूर्यायाः।

क्वैकं चक्रं वामासीत क्व देष्ट्राय तस्थथुः।। (14/1/14)

यदयातं शुभस्पती वरेयं सूर्यामुप।

विश्वे देवा अनु तद् वामजाजन् पुत्रः पितरमवृणीत पूषा।।

(14/1/15)

अर्थात् हे अश्विनी कुमारो! जब तुम तीन चक्र वाले रथ से सूर्या के विवाह के सम्बन्ध में पूछने आये तब तुम्हारा एक चक्र कहा था? तुम सब कुछ बताने के लिए कहाँ ठहरे थे?

वस्तुतः यहाँ अश्विदेव विवाह की मध्यस्थता की भूमिका का निर्वहण करते है।

इस काण्ड में मध्यस्थ का अभिनन्दन किया गया है तथा उसकी श्रेष्ठता ओर योग्य होना भी आवश्यक बताया गया है-

अर्यमणं यजामहे सुबन्धुं पतिवेदनम् (14/1/17) अर्थात् उत्तमबन्धुओं से युक्त पति का ज्ञान देने वाले तथा श्रेष्ठ मन वाले मनुष्य का हम सत्कार करते हैं। सोम और सूर्या के विवाह का सभी देवता अनुमोदन करते है तथा पूषा ने भी जिस प्रकार पुत्र पिता के स्वीकार करता है। उसी प्रकार इस विवाह का समर्थन किया-विश्वे देवा अनु तद्वामजानन्पुत्रः पितरमवृणीत पूषा। (14/1/15) वेद का यह प्रसंग वाग्दानविधि का प्रतिपादक है।

पाणिग्रहण-

विवाह की सबसे महत्त्वपूर्ण विधि है-पाणिग्रहण। इस विधि द्वारा वर वधू के सभी उत्तरदायित्वों को अपना उत्तरदायित्व समझने की प्रतिज्ञायें करता है और उसके प्रति अपनी अभिन्न मित्रता एवं गहरी आत्मीयता के भावों को प्रकट करता है।

यह विधि भारत में भी सर्वत्र और विदेशों में भी विवाह के समय किसी न किसी रूप में प्रचलित है परन्तु इसका वास्तविक भावगाम्भीर्य, पवित्रता उदारता तथा नारी की उच्चतम प्रतिष्ठा की जो भावना इन मन्त्रों से उजागर होती है। वह कहीं और नहीं। वर वधू का हस्तग्रहण करते हुए कहता है-

गृह्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः।

भगो अर्यमा सविता पुरंधिर्मह्यं त्वादुर्गापत्याय देव।।

(14/1/50)

भगस्ते हस्तमग्रहीत्सविता हस्तमग्रहीत्।

पत्नी त्वमसि धर्मणाऽहं गृहपतिस्तव।। (14/1/51)

ममेयस्तु पोष्या मह्यं त्वादाद् बृहस्पतिः।

मया पत्या प्रजावति संजीव शरदः शतम्।। (52)

त्वष्टा वासो व्यदधाच्छुभे कं बृहस्पतेः प्रशिषा कवीनाम्।

तेनेमां नारी सविता भगश्च सूर्यामिव परिधत्तां प्रजया।।(53)

इन्द्राग्नी द्यावापृथिवी मातरिश्वा मित्रावरुणा भगो अश्विनोभा।

बृहस्पतिर्मरुतो ब्रह्म सोम इमा नारी प्रजया वर्धयन्तु।। (54)

अहं विष्यामि मयि रूपमस्या वेददितपश्यन्मनसः कुलायम्

न स्तेयमद्मि मनसोदमुच्ये स्वयं श्रथ्नानों वरुणस्य पाशान्।। (57)

इन छः मन्त्रों में वह जो प्रतिज्ञायें करता है वे निश्चितरूप से गृहस्थ जीवन को स्वर्गाश्रम में परिणत करने के दिव्य सूत्र हैं।

प्रथम मन्त्र में वर कहता है-हे स्त्री! मैं तेरा पाणिग्रहण अपने सौभाग्य की वृद्धि के लिए करता हूँ। मुझ पति को प्राप्त करती हुई तुम वृद्धावस्था पर्यन्त मेरे साथ-साथ रहना। भग, अर्यमा, सविता पुरन्धि और सब देवों ने तुझको मेरे हाथ में गृहस्थाश्रम में चलाने के लिए दिया है।

दूसरे मन्त्र में वर कहता है-भग ने तेरा हाथ पकड़ा है, सविता ने तेरा हाथ पकड़ा है, तू धर्म से मेरी पत्नी है और मैं तेरा गृहपति हूँ।

तीसरे मन्त्र में कहा-यह स्त्री मेरे द्वारा पोषण करने योग्य हो। बृहस्पति ने तुझे मुझको दिया। हे संतान पैदा करने वाली! तू मुझ पति के साथ सौ वर्ष तक जीवित रहे।

चतुर्थ मन्त्र के भाव है-बृहस्पति और कवियों के आशीर्वाद के साथ त्वष्टा ने यह मन्त्र बनाया है। उससे इस स्त्री को सविता और भग उत्तम संतान से युक्त करें।

पञ्चम मन्त्र में इन्द्र आदि सभी देवताओं से सन्तानवृद्धि के आशीर्वाद की याचना है।

छठे मन्त्र में वर वधू के प्रति प्रेमातिरेक से अभिभूत हुआ प्रतिज्ञा करता है-मन से अपने कुल की वृद्धि को देखता हुआ इस कन्या के रूप को अपने अन्दर स्थापित करता हूँ वह भी मेरे इस प्रेमभाव को समझे। मैं कभी मन से भी इस वधू के साथ चोरी का व्यवहार नहीं करूँगा और न ही चोरी की कोई वस्तु खाऊँगा और मैं स्वयं वरुण के पाशों को शिथिल करता हूँ।

वस्तुतः वर के द्वारा वधू के हस्ताग्रहण का तात्पर्य वधू को सौभाग्य की वृद्धि करने वाली सिद्ध करने के साथ-साथ नव वधू को सुरक्षाकवच प्रदान करना भी है ताकि अपरिचित गृह तथा अपरिचितजनों के मध्य जीवन यापन में उसे किसी भी प्रकार का एकाकीपन अथवा कोई आशङ्का या भय न रहे।

इन छह मन्त्रों के पश्चात् सप्तम मन्त्र में वर कहता है-अमोऽहमस्मि सा त्वं सामाहमस्मृक त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वम्। ताविह सं भवाव प्रजामा जनयावहै। 14/2/71 अब तक वर उत्तरोत्तर एक से बढ़कर एक प्रतिज्ञायें करते-करते अन्त में अपने हृदय में वधु के प्रति गहरी एकात्मकता का अनुभव करने लगता है इसलिए वह कहता है कि-हम दोनों एक ही है मैं यदि प्राण हूँ तो तुम शक्ति हो। मैं साम हूँ तो तुम ऋचा हो। द्युलोक हूँ तो तुम पृथ्वी हो। आओ हम तुम दोनों इकटठे होकर सन्तानोत्पति करेंगे। इस मन्त्र के भाव से स्पष्ट है कि विवाह की उपयोगिता पति पत्नी द्वारा मात्र क्षणिक वासना पूर्ति करने से नहीं बल्कि आजीवन परस्पर सम्बद्ध होकर इहलौकिक उन्नति एवं समृद्ध के साथ-साथ पारलौकिक पथ पर आरूढ़ करने में है।

अश्मारोहण-

अश्मारोहण की क्रिया की झलक भी अथर्ववेद में प्राप्त होती है-

स्योनं ध्रुवं प्रजायै धारयामि तेऽश्मानं देव्याः पृथिव्या उपस्थे।

तमा तेष्ठानुमाद्या सुवर्चा दीर्घ त आयुः सविता कृणोतः।।

14/1/47

इस मन्त्र में वर कहता है-मैं दिव्य पृथिवी के ऊपर यह पवित्र और दृढ़ पत्थर सन्तति के लिए स्थापित करता हूँ। सुखमय और आह्लादयुक्त होकर तुम इस पर खड़ी होओ। सविता तुम्हारी आयु दीर्घ करे।

लाजा होम एवं परिक्रमा-

इस विधि को उत्तर भारत में लाँवा फेरे कहा जाता है और इसी के पश्चात् ही विवाह को पूर्ण माना जाता है। इस विधि में अथर्ववेद के दो मन्त्र प्रयुक्त हैं-इयं नार्युपब्रूते पूल्यान्यावपन्तिका। दीर्घायुरस्तु में पतिर्जीवाति शरदः शतम्। 14/2/63

तुभ्यमग्ने पर्यवहन्त्सूर्या वहतुना सह। पुनः पतिभ्यो जायां दा अग्ने प्रजया सह। 14/2/1

प्रथम मन्त्र पर वर एवं वधु लाजा की आहुति देते हैं और दूसरे मन्त्र द्वारा वे दोनों अग्नि की परिक्रमा करते हैं।

वर एवं वधू को आशीर्वाद एवं शिक्षा-

विवाह सम्पन्न होने के पश्चात् विवाह में उपस्थित सभी जन वर एवं वधू को आशीर्वाद एवं शिक्षाएं प्रदान करते हैं। तद्यथा-

वधू को-प्रतितिष्ठ विराडसि विष्णुरिवेह सरस्वति। सिनीवाली प्रजायतां भगस्य सुमतावसत्।

14/2/15

हे स्त्री! तू यहां प्रतिष्ठित हो तू विशेष तेजस्विनी है। तेरा पति यह विष्णु के समान है। हे विद्या और अन्न से युक्त देवी। इसे सन्तान हो और यह भाग्य देव की सुमति में रहे।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय

पंजाब विश्वविद्यालय से दयानन्द चेयर को समाप्त नहीं होने देंगे

पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में यू. जी. सी. द्वारा दयानन्द चेयर की स्थापना महर्षि दयानन्द के जीवन, उनके कार्यों पर शोध करने के लिए स्थापित की गई है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सामाजिक कुरीतियों, बाल विवाह, पाखण्ड़ व अन्धविश्वास को दूर करने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया था। नारी जाति को शिक्षा का अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष किया। आज नारी प्रत्येक क्षेत्र में पुरूष वर्ग के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य कर रही है तो इसका श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को जाता है। विश्वविद्यालय में किसी महापुरूष के नाम पर चेयर स्थापित करने का यही उद्देश्य होता है कि आने वाली पीढ़ियां उन महापुरूषों के बारे में जान सके और उनके कार्यों पर शोध कर सके। इसलिए पंजाब विश्वविद्यालय में यू. जी. सी. द्वारा महर्षि दयानन्द के नाम से चेयर की स्थापना की गई थी। परन्तु विश्वविद्यालय कुछ निजी स्वार्थों के कारण दयानन्द चेयर का संस्कृत विभाग में विलय करना चाहता है। विश्वविद्यालय का यह निर्णय आर्य समाज की जन-भावनाओं के खिलाफ है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरूदत्त भवन, किशनपुरा जालन्धर में इस विषय को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की अध्यक्षता में हुई। इस मीटिंग में पंजाब विश्वविद्यालय द्वारा यू.जी. सी. द्वारा स्थापित दयानन्द चेयर को संस्कृत विभाग में विलय करने के निर्णय पर चर्चा की गई। पूरे पंजाब से आए सभी अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों ने इस निर्णय का कड़ा विरोध किया। सभी सदस्यों ने इस महत्वपूर्ण विषय पर अपने-अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का कुरीतियों को दूर करने से लेकर देश की आजादी तथा शिक्षा के क्षेत्र में भरपूर योगदान है। महर्षि दयानन्द के इस उपकार को भुलाया नहीं जा सकता। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कार्यक्षेत्र में आने से पहले हमारा देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ने के साथ-साथ सामाजिक कुरीतियों तथा पाखण्ड़ व अन्धविश्वासों का गढ़ बन चुका था। नारी जाति के लिए शिक्षा के द्वार बन्द कर दिए गए थे। मूर्ति पूजा के कारण हमारा समाज अनेक प्रकार से बँट चुका था। महर्षि दयानन्द प्रथम ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने इन सबके विरूद्ध आवाज उठाई। मीटिंग में यह प्रश्न उठाया गया कि क्या आज की पीढ़ी को या आने वाली पीढ़ियों को इस विषय से अवगत नहीं होना चाहिए? क्या महर्षि दयानन्द के जीवन और उनके कार्यों पर शोध करने का अधिकार छात्रों को नहीं है? क्या महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज के सिद्धान्तों और वैदिक संस्कृति को जानने का अधिकार छात्रों को नहीं है? इन सभी मुख्य केन्द्र बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा की गई और इस बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब विश्वविद्यालय के इस निर्णय से सहमत नहीं है और दयानन्द चेयर का विलय संस्कृत विभाग में नहीं करने देगी। महर्षि दयानन्द ने शिक्षा के क्षेत्र में जो योगदान दिया है उसे भुलाया नहीं जा सकता। इसलिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने निर्णय लिया है कि 16 अप्रैल 2018 को पूरे पंजाब में सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधि अपने-अपने जिले में जिलाधीशों को एक ज्ञापन देंगे तथा उसकी प्रतिलिपि विश्वविद्यालय के कुलपति तथा कुलाधिपति को भेजी जाएगी। इसके बावजूद भी अगर विश्वविद्यालय के द्वारा यह कुत्सित प्रयास करने का निर्णय लिया गया तो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पूरे पंजाब में आन्दोलन करेगी। मैंने दिल्ली में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की मीटिंग में इस मुद्दे को उठाया और विस्तार से चर्चा हुई। सार्वदेशिक सभा की बैठक में भी यह निर्णय लिया गया कि पंजाब विश्वविद्यालय के इस निर्णय के खिलाफ सभी आर्य प्रतिनिधि सभाएं अपने-अपने राज्यों में राज्यपालों के माध्यम से अपना ज्ञापन सौंपकर विश्वविद्यालय के इस निर्णय से अवगत कराया जाएगा। दयानन्द चेयर के संस्कृत विभाग में विलय का निर्णय आर्य समाज की भावनाओं के खिलाफ है और आर्य समाज इसे कतई बर्दाशत नहीं करेगा।

सन् 1875 में महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज ने अपने प्रादुर्भाव काल से लेकर देश की आजादी के लिए भरपूर योगदान दिया है। आर्य समाज एक राष्ट्रवादी संगठन है जिसकी नींव रखते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि बुरे से बुरा स्वदेशी राज्य भी अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से बढ़कर है अर्थात् दूसरों के अधीन रहकर राष्ट्र खुशहाल नहीं हो सकता। यही कारण था कि आर्य समाज और महर्षि दयानन्द की विचारधारा से प्रेरणा लेकर अनेक क्रान्तिवीरों ने देश की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष किया। आजादी का इतिहास लिखने वाले पट्टाभि सीतारमैया ने इस बात को स्वीकार किया है कि देश की आजादी में आर्य समाज का 85 प्रतिशत योगदान है। देश की आजादी के पश्चात भी आर्य समाज ने हिन्दी आन्दोलनों में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इनके अलावा महर्षि दयानन्द तथा उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ अपनी आवाज हमेशा बुलन्द की। जिस नारी जाति को पैर की जूती समझा जाता था, अबला कहा जाता था, घर की चारदीवारी में कैद करके शिक्षा के अधिकारों से वंचित किया गया था आज वही नारी जाति आर्य समाज के कारण शिक्षा का अधिकार प्राप्त करके पुरूषों के बराबर खड़ी है। ऐसी महान् क्रान्तिकारी, समाज सुधारक संस्था तथा उनके संस्थापक के नाम पर यू. जी. सी. द्वारा स्थापित चेयर को बिना किसी कारण के विश्वविद्यालय प्रशासन किस प्रकार समाप्त कर सकता है या संस्कृत विभाग में विलय कर सकता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब किसी भी हालत में दयानन्द चेयर का विलय संस्कृत विभाग में नहीं होने देगी। संस्कृत विभाग में विलय करने से महर्षि दयानन्द के ऊपर होने वाला शोध कार्य रूक जाएगा और आने वाली पीढ़ियां अपने महापुरूषों के ज्ञान से वंचित रह जाएंगी। इसीलिए पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ का प्रशासन अपने इस निर्णय पर पुनर्विचार करे।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

भजन संध्या का आयोजन

आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना में शहीदी दिवस, आर्य समाज स्थापना दिवस, नव विक्रम संवत् पर विशाल संध्या का आयोजन किया गया जिसमें विशेष तौर पर आर्य समाज समराला के पुरोहित और भजनोपदेशक पंडित राजेन्द्र व्रत शास्त्री जी और फिरोजपुर से प्रसिद्ध भजनोपदेशक विजय आनन्द जी पधारे। भजन संध्या से पहले आर्य समाज दाल बाजार के पुरोहित पं. अरविन्द शास्त्री जी ने गायत्री महायज्ञ सम्पन्न करवाया। यज्ञ के पश्चात पं. राजेन्द्र व्रत शास्त्री जी ने वैदिक और देशभक्ति के भजनों के द्वारा सबका मन मोह लिया। उसके बाद फिरोजपुर से पधारे श्री विजय आनन्द जी ने ऋषि महिमा का गान किया। श्री विजय आनन्द जी के मधुर भजनों से पूरा पंडाल मन्त्रमुग्ध हो गया। मंच संचालन आर्य समाज के महामन्त्री श्री सुरेन्द्र टण्ड़न जी कर रहे थे। सुन्दर नगर नगर निगम से पार्षद चौधरी यशपाल जी विशेष आमन्त्रण पर आर्य समाज दाल बाजार में पधारे जिनका स्वागत आर्य समाज के प्रधान श्री सतपाल नारंग, श्री सन्त कुमार, श्री के.के. पासी, श्री सुभाष अबरोल, श्री संजीव चड्ढा, श्री रमाकान्त महाजन आदि ने किया। आर्य समाज दाल बाजार के अधिकारीगण संजीव चड्ढा, सुभाष अबरोल, रमाकान्त महाजन, संत कुमार, सुरेन्द्र शास्त्री, किरण टण्ड़न, माता जनक आर्या, नीतू, रेनू टण्ड़न, कपिल नारंग, सतीश कुमार, प्रभा सूद, सुलक्षणा माता, वेद प्रिय चावला, ओम प्रिय चावला, अशोक वैद्य, अजय मोंगा, अनिल आर्य, आर्य वीर दल से मोहित महाजन, सिद्धान्त अबरोल, सचिन टण्ड़न, काका , अनमोल आदि ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। अंत में आर्य समाज के प्रधान श्री सतपाल नारंग जी ने सबका धन्यवाद किया। अंत में ऋषि लंगर का प्रबन्ध किया गया।

सुरेन्द्र टण्ड़न महामन्त्री आर्य समाज दाल बाजार

कल्याण का मार्ग

ले. -डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद

भूमिका-कल्याण का मार्ग नाम से यह पुस्तक वेद के आदेश प्राणी-मात्र के कल्याण को सामने रखकर तैयार की गई है। इस पुस्तक की छाया में प्राणी अपने कल्याण के साथ ही साथ जन-जन का कल्याण करने में भी सक्षम हो सकता है। वेद मन्त्रों की विशद् व्याख्या होने के कारण स्पष्ट है कि यह हमें वेद-मार्ग पर ही ले जाने का कार्य करेगी।

वेद स्वत: प्रमाण परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में चार वेद का ज्ञान चार पवित्र ऋषियों (जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य और अंगीरा थे।) के माध्यम से जीव मात्र के कल्याण के लिए दिया। यह चार वेद किसी अन्य के प्रमाण की आवश्यकता नहीं रखते क्योंकि यह चार वेद ईश्वर का दिया ज्ञान होने के कारण स्वत: प्रमाण हैं। इस का भाव यह है कि हमारी कोई भी समस्या हो, उसका समाधान तो वेद देते ही हैं किन्तु इसके साथ ही साथ किसी समस्या के समाधान सम्बन्धी किसी प्रमाण की आवश्यकता हो तो, उसका भी समाधान वेद से ही मिलता है, अन्यत्र नहीं। हमारे किसी भी कार्य के सम्बन्ध में मूल स्त्रोत का पता लगाना हो तो उसका समाधान भी हम वेद से ही करते हैं। हमें क्या करणीय है तथा क्या करणीय नहीं है ? इसके लिए भी हमें वेद की ही शरण में जाना होगा। इसलिए ही हम कहते हैं कि वेद स्वत: प्रमाण हैं।

सब के लिए वेद की शरण आवश्यक

जब तक विश्व वेद के आदेशों का पालन करता रहा, जब तक विश्व में वेद ज्ञान का पालन होता रहा। तब तक विश्व में शांति रही, सब में विश्वास रहा, सब लोगों में भ्रातृभाव बना रहा, सब लोग एक दूसरे का आदर करते रहे, विश्व धन-धान्य से संपन्न रहा। विश्व में किसी प्रकार का संकट नहीं खड़ा हुआ किन्तु ज्यों ही हम में से कुछ लोगों ने वेद के मार्ग को छोड़ा, ज्यों ही अपने मन के आधीन होकर स्वाधीन रूप से कार्य किया। त्यों ही विश्व के सामने संकट के बादल आ खड़े हुए। लड़ाई झगड़े, कलह क्लेश, अभाव, अति वृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़ और सूखे आदि की ही भाँति प्रकृति के अनेक प्रकोप हमें निगलने के लिए, हमें ग्रसने के लिए आ खड़े हुए। मनुष्य मात्र इन संकटों से उबरने का आज तक प्रयास कर रहा है किन्तु उसे कोई मार्ग दिखाई नहीं दे रहा। मार्ग दिखाई दे भी क्यों? क्योंकि जिस वेद में इस संकट का समाधान है, वह, उस वेद की शरण में जाते ही नहीं, जाना तो क्या उन्होंने वेद नाम के ग्रन्थ को देखा ही नहीं, जिस में सृष्टि के उदय के साथ ही परम पिता परमात्मा ने हमारी प्रत्येक समस्या का समाधान दिया है। जब तक हम वेद की शरण में नहीं जावेंगे न तो हमें हमारी समस्या का ही ठीक से ज्ञान होगा और न ही हम उसका समाधान ही खोज सकते हैं। इसलिए सुख के अभिलाषी प्राणी के लिए वेद का ज्ञान आवश्यक है, वेद की शरण आवश्यक है।

वेद सब के लिए प्राचीन काल से ही मार्ग दर्शक

जब हम हमारे प्राचीन साहित्य को देखते हैं तो हम पाते हैं कि यह सब साहित्य भी एक स्वर से हमें इंगित कर रहा है कि सब समस्याओं का समाधान वेद में है और वेद ही स्वत: प्रमाण हैं। अन्य कोई ग्रन्थ स्वत: प्रमाण नहीं है। यथा हमारे सब स्मृतिकार, हमारे सब शास्त्रकार, हमारे सब दर्शनकार, हमारे जितने भी उपनिषदकार हुए हैं। वह भी सब, इस सब के अतिरिक्त हमारे इतिहास ग्रंथकार (रामायण, महाभारत, श्रोतसूत्रकार, धर्मसूत्र तथा गृह्यसूत्र वेद की ही शरण में जाना होगा। इसलिए ही हम कहते हैं कि वेद स्वत: प्रमाण हैं। आदि, इन सब के लेखकों ने स्पष्ट रूप से) वेद को ईश्वरीय ज्ञान स्वीकाते हुए। इन्हें स्वत: प्रमाण माना है। वेद के अतिरिक्त यह सब लेखक अन्य सब ग्रन्थों को परत: प्रमाण मानते हैं। जब हम इन सब ग्रंथों का अवलोकन करते हैं तो हमें इस सम्बन्ध में अनेक श्लोक मिलते हैं। जिनमें वेद को स्वत: प्रमाण होने का दावा किया गया है।

मनु महाराज ने तो अपने अमर ग्रन्थ मनुस्मृति में यह स्पष्ट स्वीकारते हुए इसके १२.१७ श्लोक में संकेत किया है कि वेद सब के लिए प्राचीन काल से ही मार्ग-दर्शक रहे हैं। वेद ने मानव के लिए नेत्र का कार्य किया है। वेद की महिमा को पूरी भाँति समझ पाना कठिन है। हमारे चार वर्ण, चार आश्रम, तीन काल तथा तीन लोक सम्बन्धी जितना भी ज्ञान है। यह सब वेद से ही हमें प्राप्त होता है। बृहदारण्यक उपनिषद् तो यह मानता है कि वेद उस महान् प्रभु के नि:श्वास रूप हैं। इस प्रकार के ही शब्द हमें हमारे अन्य ग्रन्थों में मिलते हैं। इस सबसे एक तथ्य निकल कर आता है कि अन्य ग्रंथों में यदि कोई प्रसंग इस प्रकार का आ जावे। जिसमें वेद के आदेशों के विरोध का आभास आता हो तो वह वचन अप्रमाणिक ही होंगे।

वेद सार्वकालिक उपदेश

हम जानते हैं कि वेद ही सार्वकालिक उपदेश हैं। यह इस सृष्टि के किसी भी भाग में तथा किसी भी समय में एक समान काम आते हैं। यह न कभी पुराने ही होते हैं और न ही कभी कालातीत होते हैं। इस कारण इनका सदा तथा प्रत्येक स्थान पर समान प्रभाव होता है तथा समान रूप से काम में आते हैं। इन मन्त्रों के मनन चिंतन से मानव मात्र की सब समस्याओं का समाधान होना स्वाभाविक ही है।

पितृ तुल्य प्रभु सर्वत्र उपलब्ध

परम पिता परमात्मा बालक का इस प्रकार पालन करता है। जिस प्रकार पिता अपने बालक की अंगुली पकड़ कर उसे चलना, बोलना, दूसरे का सम्मान करना आदि क्रियाओं को सिखाता है। ठीक उस प्रकार ही परमपिता भी पिताओं का भी पिता है। जब यह छोटा सा सांसारिक पिता अपनी संतान की उन्नति के लिए प्रयास करता है तथा उसे आगे ले जाने के लिए सदा प्रयत्नशील रहता है तो फिर प्रभु तो संसार के समग्र प्राणियों का ही पिता है। संसार का अधिष्ठाता, संसार का जन्मदाता प्रभु फिर इसे उन्नति पथ पर क्यों न ले कर जावेगा ? अवश्य ले जावेगा। वह ज्ञान का भंडारी अपनी इस प्रजा को वेद ज्ञान का भण्डार देने से क्यों पीछे हटेगा ? निश्चय ही नहीं।

प्रभु सब प्राणियों को सुख बांटता है। प्रभु सब प्राणियों को समान रूप से वेद का ज्ञान बांटता है। प्रभु सब प्राणियों को आगे बढ़ने के साधन उपलब्ध कराता है किन्तु कर्म के, पुरुषार्थ के साथ प्रयत्न परमपिता यह सब उन्नति के मार्ग जीव को देता है किन्तु ठीक वैसे जैसे पिता अपनी संतान को देता है। प्रत्येक पिता चाहता है कि उसकी संतान सच्चरित्र, आज्ञाकारी, बड़ों का आदर-सत्कार करने वाली, गुणवान व पुरुषार्थी हो। परमपिता परमात्मा तो एक दो का नहीं, पूरी सृष्टि का पिता होता है, उसने एक परिवार की नहीं, पूरे संसार की व्यवस्था करनी होती है। इसलिए प्रभु उस का ही सहयोग करता है, जो अपना सहयोग पुरुषार्थ के द्वारा स्वयं करते हैं। इसलिए प्रभु का आशीर्वाद पाने के लिए पुरुषार्थी होना आवश्यक होता है।

भाषा

मेरी पुस्तकें, मेरा लेखन विद्वानों के लिए नहीं सर्वसाधारण के लिए होती हैं। इसलिए कुछ इस प्रकार की भाषा का मेरी पुस्तकों में, मेरे लेखन में प्रयोग किया जाता है। जिसे सर्वसाधारण लोग बड़ी सरलता से समझ सकें। इसलिए मैंने बहुत साधारण जनभाषा, जो प्रचलित है, का ही प्रयोग किया है। इसे पढ़कर साधारण लोग भी वेद की गूढ़ बातों को सरलता से ग्रहण कर सकेंगे।

व्याख्यान कला का साधन

मेरी इस छोटी सी पुस्तक को व्याख्यान सिखाने का अति उत्तम साधन कह सकते हैं। जो व्यक्ति उत्तम ज्ञान नहीं रखते, जो व्यक्ति व्याख्यान तैयार नहीं कर सकते, उनके लिए इस पुस्तक में बने बनाए व्याख्यान तैयार हैं। यह व्याख्यान भी विभिन्न वेद मन्त्रों के आधार पर हैं। आप प्रत्येक दिए गए वेद मन्त्र की दी गई व्याख्या को ग्रहण कर इस पुस्तक के प्रत्येक चरण को एक व्याख्यान के रूप में तैयार किया गया स्वीकार सकते हैं। जिसे स्मरण करके अथवा पढ़ कर जन-मानस के सामने रख कर लोगों को उत्तम वेद मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हुए उत्तम प्रवचनकर्ता बन कर जन-जन में प्रशंसा के पात्र बन सकते हैं।

आभार प्रदर्शन

इस पुस्तक कल्याण मार्ग के निर्माण में जिन महान् लेखकों की

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पशु-पक्षी संरक्षण

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

मानव जाति का पशु-पक्षियों एवं अन्य जीव-जन्तुओं से गहरा सम्बन्ध है। पालतू पशुओं से हमें दूध मिलता है। दूध से दूसरे पदार्थ दही, मट्ठा, मक्खन, घी, पनीर आदि प्राप्त होते हैं। ये सभी पदार्थ हमारी खाद्य सामग्री के महत्वपूर्ण भाग है। दूध नाना प्रकार के मिष्ठानों का भी मुख्य घटक होता है। शरीर के लिए वसा का अधिकांश भाग हम दूध तथा घी से ही प्राप्त करते हैं।

पशुओं से प्राप्त गोबर भी खेतों में खाद्य के रूप में प्रयुक्त होता है।

इसके काम में लेने से खेत में पैदावार की वृद्धि हो जाती है। बैल, भैंसा आदि पशुओं का कृषि कार्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। खेतों में हल चलाने, बीज बोने, सिंचाई करने आदि में इनका उपयोग होता है। कुछ पशु जैसे हाथी, घोड़ा, ऊंट, गधा, याक आदि सवारी ढोने तथा बोझा ढोने के काम में आते हैं। युद्ध के अवसर पर भी इनका उपयोग होता है। कुछ पशु जैसे बन्दर, भालू, सर्प हमारे मनोरंजन के साधन बनते हैं। बया पक्षी अपने घौंसले का निर्माण करते हुए हमें सुन्दर भवन निर्माण करने की प्रेरणा देता है। कुछ पशु-पक्षियों का उपयोग ओषध निर्माण कार्य में भी होता है। कुछ पशु-पक्षी मृत्यु के बाद भी अपने चमड़े, हड्डियों एवं पंखों के द्वारा मनुष्य जाति पर उपकार करते हैं। दु:ख की बात यह है कि ऐसे उपयोगी पशु-पक्षियों का भी मनुष्य संहार करने पर तुला हुआ है। आज संसार के 70 प्रतिशत लोग मांसाहारी बने हुए है। लाखों गायें, बकरे, भेड़ें, भैंसे प्रतिदिन काटे जा कर खाये जा रहे हैं। कई इस प्रकार जीव-जन्तुओं की तो पूरी की पूरी नस्ल को ही खाकर मनुष्य ने उसे समाप्त कर दिया है। पिछली सदी में मॉरीशस के डोडा नामक पक्षी की पूरी की पूरी नस्ल ही मनुष्य ने खाकर समाप्त कर दी है। वेद में ऐसी स्थिति की कल्पना पूर्व में ही कर ली थी। इसलिए वेद में सैंकड़ों मंत्रों द्वारा मनुष्य जाति को उपदेश दिया गया है कि वह पशु-पक्षियों एवं जंगली जीव-जन्तुओं के संवर्द्धन में अपना योगदान करें। पशुओं की नस्ल सुधारने के लिए, उनकी आयु को बढ़ाने के लिए एवं उनके स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए वह प्रयत्न करता रहे। पशु-पक्षियों को भी पौष्टिक आरोग्य प्रद खाद्य पदार्थ दिये जाएं। उनके के लिए पीने के लिए शुद्ध पानी की व्यवस्था की जाए। उनके रहने के लिए स्वच्छ कीटाणु रहित मकानों की व्यवस्था करें। उनके रोगी होने पर ओषध की उचित व्यवस्था करे।

अब हम वेदों में से कुछ मंत्र देकर उनका मन्तव्य स्पष्ट करते हैं।

सं सं स्रवन्तु पशवः समश्वाः समु पुरूषः।

सं धान्यस्य या स्फाति सं स्रवेव्य हविषा जुहोमि।।

अर्थ-(पशवः) पशु (सम्) मिलकर (अथवाः) घोड़े (सम्) मिलकर (उ) और (पुरूषः) सब पुरूष मिलकर (स्रवन्तु) चलें और (या) जो (धान्यस्य) धान्य की (सफातिः) बढ़ती है वह भी (सम् सम् स्रवन्तु) मिलकर चले। (संस्रवेण्य) कोमलता से युक्त (हविषा) अन्न के साथ (उन सब का) (जुहोमि) मैं ग्रहण करूं।

आ हरामि गवां क्षीरमाहार्ष रसम्।

आ हता अस्माकं वीरा आ पत्नीरिदमस्तकम्।।

अथर्व. 2.26.5.

अर्थ-(गवां) गौओ के (क्षीरम्) दूध को (आ हरामि) मैं प्राप्त करूं। (क्योंकि दूध से) (धान्यम्) पोषण वस्तु अन्न और (रसम्) शारीरिक धातु को (आ अहार्षम्) मैंने पाया है। (अस्माकम्) हमारे (वीराः) वीर पुरूष (आहताः) लाए गए हैं और (पत्नी) पत्नियां भी (इदम्) इस (अस्तकम्) घर में (आ हताः) लाई गई है।

गायों के लिए सुन्दर गौशाला बनाने का भी वेदों में निर्देश है।

सं वो गोष्ठेन सुषदा संख्या सं सुभूत्या।

अहर्जातस्य यन्नाम तेना वः सं सृजामसि।। अथर्व. 3.14.1.

अर्थ-हे गौओं। (वः) तुमको (सुषदा) सुख से बैठने योग्य (गोष्ठेन) गोशाला से (सम्) मिला कर (रय्या) धन से (सम्) मिला कर (सुभूत्या) बहुत सम्पत्ति से (सम्) मिलाकर और (अहर्जातस्य) प्रतिदिन होने वाले प्राणी का (यत् नाम) जो नाम है। (तेन) उस नाम से (वः) तुमको (सम् सृजामसि) हम मिलाकर रखते हैं।

भावार्थ-गौओं को सुन्दर स्वच्छ गौशालाओं में रखकर पालें और उनको अपने धन और सम्पत्ति का कारण जान कर अन्य प्राणियों के समान सुन्दर नाम दें, उनसे पुकारें।

उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः।

अथो अन्नस्य की लाल उपहूतो गृहेषु नः।। अथर्व. 7.60.5.

अर्थ-यहां पर हमारे घरों में गौएं आदर के साथ बुलायी गई। भेड़ें, बकरी भी बुलायी गई होवे और भी अन्न का रसीला पदार्थ पास बुलाया गया होवे।

यदयवस्य क्रविषो मक्षिकाश यद्धा स्वरौ स्वधितौ रिप्त मस्ति।

यद्धस्तयोः शमितुर्यन्नखेषु सर्वा ता ते अपि देवेष्वस्तु।। यजु. 25.32

अर्थ-हे मनुष्यों। (यत्) जो (मक्षिका) मक्खी (कविषः) चलते हुए (अश्वस्य) घोड़े का (आश) भोजन करती अर्थात् कुछ मल रूधिर आदि खाती (वा) अथवा (यत्) जो (स्वरौ) स्वर (स्वधितौ) वज्र के समान वर्तमान है वा (शमितुः) यज्ञ करने वाले के (हस्तयोः) हाथों में (यत्) जो वस्तु (पिप्तम्) प्राप्त और (यत्) जो (नखेषुः) नखों में प्राप्त (अस्ति) है (ताः) वे (सर्वाः) सब पदार्थ (ते) तुम्हारे हों तथा यह समस्त व्यवहार (देवेषु) विद्वानों में (अपि) भी (अस्तु) होवे।

भावार्थ-मनुष्य को घोड़ों के लिए ऐसी घुड़शाला बनानी चाहिए। जहां उनका रूधिर मक्खी, मच्छर आदि में न पी सकें।

यजुर्वेद अध्याय 25 मंत्र 36 में कहा गया है कि कोई घोड़े आदि उपकारी पशुओं और उत्तम पक्षियों का मांस खावे तो उनको यथापराध दण्ड अवश्य देना चाहिए।

इसी अध्याय के 42वें मंत्र में कहा गया है कि घोड़ों को ऋतु-ऋतु के अनुसार चाल सिखाने वाले व्यक्तियों को रखा जावे। यजुर्वेद अध्याय 24 में 40 मंत्र है। इन मंत्रों में यह बताया गया है कि किस-किस ऋतु में कौन सा पक्षी उपयोगी होता है। जहरीले सर्प और मांसाहारी जंगली जानवरों पर नियन्त्रण रखने की भी मनुष्य को सलाह दी गई है।

कुछ पक्षी विष हरण का कार्य भी करते हैं।

त्रि सप्तः मयूर्यः सप्त सारो अ ग्रुवः।

तास्ते विषं वि जभ्रिर उदकं कुम्भिनी रव।। ऋ. 1.191.4.

अर्थ-मनुष्य को 21 प्रकार की जो मोरनियां है उनको नहीं मारना चाहिए वे विष हरण का काम करती है।

राम नवमी पर्व धूमधाम से मनाया

आर्य समाज लुधियाना रोड़ फिरोजपुर छावनी में राम नवमी का पर्व आज दिनांक 25 मार्च 2018 दिन रविवार को बड़ी श्रद्धा उत्साह एवं प्रेमपुर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम श्री मन मोहन शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ प्रसिद्ध आयकर अधिवक्ता श्री अजय चावला दम्पत्ति के यज्ञमानत्व में सम्पन्न किया गया। श्री शास्त्री जी ने पर्व के महत्ता पर प्रकाश डालते हुए 'मर्यादा पुरुषोत्तम' का अर्थ समझाते हुए श्री राम चन्द्र जी की सात मर्यादाओं का वर्णन किया तथा समस्त जनों को पर्व की शुभ कामनाएं प्रदान कीं। इस शुभ अवसर पर सुप्रसिद्ध आर्य परिवार एवं दानवीर तथा समाज सेवक चावला परिवार के अतिरिक्त श्री विपन मित्तल (सपरिवार) श्री कुलदीप वर्मा, श्री हरीश गुप्ता, श्री रमिकान्त, श्रीमति आनन्द अपने पुत्र के साथ तथा अन्य अनेक गणमान्य आर्य महानुभाव उपस्थित थे। आर्य समाज के प्रधान एवं भजनोपदेशक श्री विजय आनन्द जी ने राम नवमी पर विशेष भजन प्रस्तुत किया तथा राम चन्द्र के मनुष्योंचित गुणों का वर्णन किया। यशस्वी मन्त्री श्री मनोज आर्य ने प्रशासन द्वारा नशामुक्ति प्रचार अभियान की जानकारी देते हुए आज के दिन नशामुक्त समाज संरचना की बात समझाई। शान्ति पाठ व जलपान के साथ आज का यह सत्संग सम्पन्न हुआ।

मनोज आर्य
महामन्त्री

पृष्ठ 2 का शेष-अथर्ववेद में विवाह...

अघोचक्षुरपतिघ्नी स्योना शग्मा सुशेवा सुयमा गृहेभ्यः।

वीरसूर्देवृ कामा सं तवयै-धिषीमहि सुमनस्यमाना।

14/2/17

हे वधू! अपने घरों के लिए क्रूर दृष्टि न रखने वाली, पति की हत्या न करने वाली सुखकारिणी, कल्याणकारिणी, सेवा करने योग्य, सुनियमों से चलने वाली वीर पुत्र उत्पन्न करने वाली, देवर की इच्छा पूर्ण करने वाली और उत्तम अन्तः करण से युक्त तुझसे सम्पन्न हो।

अठारहवें में भी-

देवर का नाश न करने वाली, पति घात न करने वाली पशुओं का हित करने वाली, उत्तम नियमों से चलने वाली, और उत्तम तेज़ से युक्त सन्तान युक्त, वीर पुत्र उत्पन्न करने वाली, घर में देवर रहे ऐसी कामना करने वाली सुखदायिनी तू इस गार्हपत्य अग्नि की पूजा कर। 20वें तथा 23वें 25वें में भी अग्नि उपासना के लिए नारी को उपदेश दिया गया है।

26, 27, 28, 29 31वें मन्त्र में नारी को आशीर्वाद, उद्बोधन के साथ नारी गौरव के भी उच्च भाव दर्शाये गये हैं-

सुमङ्गली प्रतरणी गृहणां सुशेवा पत्ये श्वशुराय शम्भुः।

स्योना श्वश्रवै प्रगृहान्-विशेमान्।।26।।

यह नारी मङ्गलमाङ्गल्य से सम्पन्न घरों से दुख को दूर करने वाली पति की उत्तम सेवा करने वाली श्वशुर को सुख देने वाली सास के लिए सुखकर इन घरों में प्रविष्ट हो।

27वें में भी इसी प्रकार का भाव है-

यह वधू ससुर पति, घर और सब प्रजा समूह के लिए स्योना सुखकर हो।

सुमङ्गलीरिव वधूरिमां समेत पश्यत।

सौभाग्यमस्मै दत्त्वा दौर्भाग्यै-र्विपरेतन।।28।।

अर्थात् हे लोगो! इकटठे होओ और इसको देखो, यह मङ्गल-माङ्गल्य से सम्पन्न है, इसको सौभाय का आशीर्वाद देकर इसके दुष्ट भाग्य को दूर करते हुए वापिस जाओ।

29वें में कहा-

यहां उपस्थित दुष्ट हृदय वाली और बूढ़ी स्त्रियाँ भी इसे निश्चयपूर्वक तेज देवें और अपने-अपने घर को वापिस जाएँ।

इन्द्राणव सुबुधा बुध्यमाना ज्योतिरग्रा उषसः प्रति जाग-रासि।।31।।

अर्थात् इन्द्राणि के समान ज्ञान वाली होकर सूर्य की ज्योति के पहले आने वाली उषाओं के पूर्व ही निद्रा छोड़कर उठ।

प्रबुध्यत्व सुबुधा बुध्यमानां
दीर्घायुत्वायशतशारदाय।
गृहान्गाच्छ गृहपत्नी यथासों दीर्घं त आयुः सविता कृणोतृ।।75।।

अर्थात् हे वधू! तू उत्तम ज्ञानयुक्त तथा जागृत रहकर सौ वर्ष दीर्घ जीवन के लिए जागती रह। अपने पति के घर को जा और गृहस्वामिनी जैसी बनकर रह। सविता तेरी आयु दीर्घ करे।

उपर्युक्त मन्त्रों में नारी को एक साथ कई सुन्दर नामों एवं विशेषणों सुभूषित किया गया है। तद्यथा- सरस्वती, सिनीवाली, स्योना, शग्मा, सुशेवा, सुयमा, वीरयूः, देवृकामा, सुमनस्यमाना, सुवर्चा, प्रजावती, सुमङ्गली, प्रतरणी गृहाणां, शम्भु, इन्द्राणीव, सुबुधा गृहपत्नी आदि।

वर एवं वधु दोनों को ही सम्मिलित आशीर्वाद एवं शिक्षा-

पति एवं पत्नी परस्पर असीम सौहार्द एवं स्नेह के सुदृढ़ बन्धन में बन्ध कर ही सृष्टि के प्रवाह को चिरन्तन बनाते हैं। ब्राह्य दृष्टि से पृथक होते हुए भी आत्मा और मन से दो भिन्न-भिन्न मिले हुए जलों के सदृश ये एक और अभिन्न है। इसलिए वेद कहता है-

इहेवस्तं मा वियोष्टं विश्व-मायु-र्व्यश्नुतम।

क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिमोदमानो स्वस्तकौ।। 14/1/22

पूर्वापरं चरतो माययैतौ शिशू क्रीडन्तौ परियातोऽर्णवम्

विश्वान्यो भुवना विचष्ट ऋतूँन्यो विदधज्जायसे नवः।।

14/23

इन दोनों मन्त्रों में स्पष्ट कहा गया- यह स्त्री और पुरुष अपने ही घर में रहे, इनका कभी भी सम्बन्ध विच्छेद न हो। अपने बच्चों, नातियों के साथ खेलते हुए आनन्दित होकर पूर्ण आयु का भोग करे। वेद में तलाक सम्बन्ध विच्छेद का विधान नहीं है बल्कि स्थिर विवाह का ही आदेश हैं।

स्योनाद्योनेरधि बुध्यमानौ हसामुदौ महसा मोदमानौ।

सुगू सुपुत्रौ सुगृहौ तराथो जीवावुषसो विभातीः।।

14/2/43

अर्थात् हास्यविनोद करने वाले, अति आनन्दित रहने वाले, सुखदायक शयनमन्दिर से जागकर उठने वाले उत्तम इन्द्रियों, गौओं, उत्तमपुत्रों और उत्तम घर से युक्त स्त्री और पुरूषो तुम दोनों प्रकाशमय उषः काल वाले दीर्घायुष्य के दिनों को सुख के साथ तैर जाओ।

चकवाचकवी का परस्पर प्रेमतिरेक विश्वप्रसिद्ध है। वेद में इस प्रेम को पति पत्नी के मध्य समर्थित करते हुए कहा गया-

इहेमाविन्द्र सं नुद चक्रवाकेव दम्पती। प्रजयेनौ स्वस्तकौ विश्वमायुर्व्यश्नुताम्।।

14/2/64

अर्थात् हे इन्द्र! चक्रवाक पक्षी के जोड़े के समान इन पति पत्नी को इस संसार में प्रेरित कर। ये दोनों उत्तम घर वाले सन्तान के साथ सम्पूर्ण आयु का उभोग करें।

अथर्ववेद में प्रतिपादित वर एवं वधू को दिये गये आशीर्वाद वे सुदृढ़ नींव है, जिस पर गृहस्थाश्रमरूपी विशाल भवन स्थायी रूप से स्थित रहता है और आपदाओं और बाधाओं के भीषण झञ्झावातों में भी जिसमें एक दरार तक नहीं आती।

इन सभी मन्त्रों के आलङ्-कारिक व्याख्यान से यह सुस्पष्ट है कि विवाह से पूर्व कन्या को माता पिता द्वारा दी गई। वैदिक शिक्षा, सदाचार, संस्कार उसके पवित्र संकल्प ही विवाह के समय उसे दिया गया। वास्तविक दहेज होता है। उसका सच्चा श्रृंगार और यह ही उसके सच्चे आभूषण होते हैं। जिनके द्वारा नारी आने वाली हर समस्या का उचित निराकरण कर न केवल परिवार में बल्कि समाज और राष्ट्र के निर्माण में भी अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देती है।

अथर्ववेद में विवाह का जो स्वरूप प्राप्त होता है उससे स्पष्ट है कि वैदिक विवाह यौनेच्छा की पूर्ति का वैधानक अनुज्ञापत्र नहीं बल्कि परस्पर त्याग, सहिष्णुता, हृदय की निश्चल अभिव्यक्ति तथा गम्भीर आत्मसमर्पण का साधन है।

इस प्रकार अथर्ववेद के इन गृहस्थाश्रम में सम्बद्ध मन्त्रों की एक-एक सूक्ति में एक-एक शब्द में गार्हस्थ्य जीवन का गहरा रहस्य है। प्रत्येक मन्त्र में अमृत संजीवनी है। आवश्यकता है मनोयोग और एकाग्रता से इसके दहोहन की। अथर्ववेद 4/11/2 के शब्दों में-

दुहे सायं प्रातः दुहे माध्य - न्दिनः परि।

दोहा में अस्य संयन्ति तान् विद्मानुपदस्वतः।।

आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नव संवत्सर मनाया

आर्य समाज हिरणमगरी उदयपुर ने आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नवसंवत्सर पर्व के उपलक्ष्य में श्रीमती ललिता मेहरा एवं श्री मुकेश पाठक के नेतृत्व में भव्य प्रभात फेरी निकाली, जिनमें बहुत अच्छी संख्या में महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। तत्पश्चात आर्य समाज मन्दिर में श्री रामदयाल जी के पौरोहित्य में पर्व विशेष पर यज्ञ का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि श्री अशोक आर्य ने सभा भवन पर ध्वजारोहण किया और श्रीमती सरला गुप्ता ने सामूहिक ध्वजगीत प्रस्तुत किया। तदुपरान्त धार्मिक सभा को सम्बोधित करते हुए श्री अशोक आर्य ने कहा कि आज के दिन वर्तमान सृष्टि की उत्पत्ति व मानव के उद्भव पर स्वामी दयानन्द के दृष्टिकोण को प्रतिपादित करते हुए प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज के दिन स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना की थी। इस समाज के उद्देश्यों एवं नियमों को स्मरण करते हुए आर्यों को आत्मचिन्तन करना चाहिए। इस अवसर पर दयानन्द कन्या विद्यालय की छात्राओं ने चौराहों पर आगन्तुकों का तिलक प्रसाद द्वारा स्वागत किया।

ललिता मेहरा मन्त्री
आर्य समाज हिरण मगरी

पृष्ठ 4 का शेष-कल्याण का मार्ग

पुस्तकों से सहायता ली गई है। जिन विद्वानों के उपदेशों व पुस्तकों की सहायता का लाभ उठाया गया है। जिनके विचारों से मार्ग मिला है। मैं उन सब का हृदय से आभारी हूँ। मेरी धर्मपत्नी श्रीमती दर्शना देवी का इस पुस्तक के लेखन में अद्वितीय सहयोग रहा है। मैं जब लेखन कार्य में तल्लीन होता था तो मुझे खाने-पीने का ध्यान नहीं होता था। इस का ध्यान मेरी धर्मपत्नी ने रखा। वह कुछ-कुछ समय के अंतराल में पानी का गिलास लेकर मेरे पास आ खड़ी होती। कभी भोजन, कभी फल आदि लेकर आ जातीं। इससे मेरे स्वास्थ्य की सुरक्षा कर मेरे लेखन कार्य को अनवरत चलने में सहायता की। मैं उसका अत्यधिक आभारी रहूँगा। इस पुस्तक के प्रकाशन का सहयोग श्रुति प्रकाशन ने देकर यह पुस्तक आप के हाथों तक पहुंचाई है। उनका भी मैं हृदय से आभारी हूँ।

पुस्तक का सुन्दर कलेवर बनाने में इसे टंकण करने वाले, मशीन पर चढ़ा कर छापने वाले तथा जिल्द बंदी कर यह पुस्तक सुन्दर कलेवर के साथ आप के हाथों तक लाने वालों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। अतः मैं इसे टंकण करने वाले मशीन पर कार्य करने वाले तथा इसकी जिल्द बंदी करने वालों का भी हृदय से आभारी हूँ, जिन सब के सतत् प्रयास के कारण यह पुस्तक सुन्दर कलेवर लेकर आप के हाथों तक आई। इन सबका हृदय से आभारी हूँ।

पुस्तक की सफलता इसके शुद्धि रहित होने से होती है। इस हेतु सतत प्रयास भी किया गया है किन्तु मानव गलतियों का पुतला है। इस कारण कोई त्रुटी संभव है। इस त्रुटी के लिए क्षमा चाहता हूँ। सुझाने पर इसे आगामी संस्करण में दूर कर दिया जावेगा। यदि इस पुस्तक में कोई कर्मी रह जाती है तो उस सब का कारण मैं अपनी अल्प बुद्धि को मानता हूँ और जो कुछ उत्तम है, उसके लिए श्रेय इसे उत्तम बनाने वाले कर्मचारियों को ही जाता है। देखने में लघु सी लगने वाली इस पुस्तक से यदि कोई प्राणी लाभ उठा कर अपने जीवन को उत्तम बना सका, कोई माता-पिता, भाई-बहिन अथवा कोई भी इस पुस्तक से मार्ग-दर्शन पा कर स्वयं व अपनी संतान के कल्याण का कारण बन सके तो मैं स्वयं को कल्याण मार्ग का सफल पथिक समझूंगा। इस में कोई त्रुटि रह गई हो तो अवगत करावें, उसे आगामी संस्करण में दूर कर दिया जावेगा।

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज फाजिल्का...

उत्सव के प्रति अपने सन्देश दिए वहीं महर्षि दयानन्द जी द्वारा समाज सुधार नारी शिक्षा व उत्थान, वेदों के वास्तविक अर्थों का प्रसारण स्वराज्य व राष्ट्रीय स्वाधीनता के संदेशों का बखान किया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि आज आर्य समाज को जहाँ कुरीतियों अन्धविश्वासों से लड़ना है वहीं जल संरक्षण और नशामुक्ति, स्वच्छ भारत के प्रति भी डट कर कार्य करना है। जल ही जीवन है और हमारे नवयुवकों के नशों से दूर रहने की प्रेरणा देनी है। आज सरकारें स्वामी जी के उपदेशों के प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप में लागू कर रही है परन्तु हमें कार्यरत्त रहना है और जल संरक्षण एवं नशों के विरुद्ध कार्यो में सजग रहना होगा यही आज आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है।

अन्त में महामन्त्री जी द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर के प्रधान जी श्री सुदर्शन शर्मा जी द्वारा आर्य समाज फाजिलका के 116वें वार्षिक उत्सव की बधाई सन्देश एवं उनके द्वारा 21000 रु की सहयोग राशि प्रदत्त करने की घोषणा की। आर्य समाज फाजिलका प्रधान डा. नवदीप जसूजा जी द्वारा सभी का धन्यवाद किया गया, विशेषतः प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी का जिन्होंने हमें आर्य समाज के कार्यो के आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी, आर्थिक सहयोग एवं उत्साहित किया।

ऋषि लंगर के साथ यह पर्व सम्पन्न हुआ जिसमें सभी आर्य पुरुष एवं स्त्री समाज के सभी सदस्य पदाधिकारी सम्मिलित हुए। मुख्यतः उपरोक्त के अतिरिक्त श्री सतीश आर्य, श्री प्रदीप अरोड़ा, डा. अमरलाल बाघला, श्री संजीव मक्कड़ जी, एडवोकेट, श्रीमती नवीन मक्कड़, श्रीमती सुनीता मिड़डा, श्रीमती कृष्ण कुक्कड़ जी उपस्थित रहे।

डा. नवदीप चावला
प्रधान

आर्य समाज मन्दिर गुरुकुल विभाग में विक्रमी सम्वत् 2075 का बड़े हर्षोउल्लास के साथ किया स्वागत

आर्य समाज मन्दिर गुरुकुल विभाग फिरोजपुर शहर में विक्रमी सम्वत् 2075 के प्रथम दिन को बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। सबसे पहले प्रधान श्री इन्द्रजीत भाटिया अपनी धर्मपत्नी के साथ यजमान पद पर बैठे तथा बहुत ही श्रद्धा से दोनों ने यज्ञ में आहूति डाली।

उपरान्त माता राज छाबड़ा तथा हेमन्त स्याल जी ने वैदिक भजन गाये। बाद में छोटे से बच्चे वंश ने भजन गाकर सभी का दिल मोह लिया। यह बच्चा "वंश" आर्य समाज मन्दिर के सेवक का बच्चा है। अभी लगभग एक साल पहले ही इन्होंने आर्य समाज मन्दिर का सेवक के रूप में कार्यभार संभाला है।

आर्य समाज के नये सदस्य जिन्होंने लगभग एक वर्ष पूर्व सदस्यता ली। श्री सुरिन्द्र वोहरा उन्होंने अपने विचार रखते हुये कहा आज का दिन प्रत्येक भारतीय के लिये अहम दिन है। इस दिन का स्वागत हम सब को खुशी से करना चाहिये बिना किसी भेदभाव के। उन्होंने आज के दिन की विशेषताएं बताते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना के लिये आज के दिन को चुना था। भगवान राम चन्द्र जी का राज्यभिषेक भी आज के दिन हुआ। विक्रमादित्य जी का राज्यभिषेक भी नवसम्वत् के दिन हुआ तभी से ही विक्रमीसंवत् की शुरुआत हुई थी। आज ही नवरात्रो की शुरुआत हुई है। उन्होंने कहा कि और भी बहुत से शुभ काम इसी दिन हुये है। श्री सुरिन्द्र वोहरा ने किसी सदस्य के सहयोग साथ आर्य समाज मन्दिर में ही यज्ञ उपरान्त जरूरतमंद महिलाओं को गर्मी के मौसम में पाने वाले कपड़े बांटे तथा घोषणा की आर्य समाज मन्दिर के सेवक के एक बच्चे को पाठय सामग्री तथा तीन महीने की फीस वह अपने सहयोगी सदस्य के माध्यम से देंगे तथा जल्दी ही वह बच्चो की पाठ्य सामग्री वितरण भी करेंगे ताकि गरीब बच्चे पढ़ाई से वचिंत ना रहे। उन्होंने कहा हम सब को मिलकर ऐसे नेक काम करने होगे तभी हमारा समाज तरक्की की ओर बढ़ेगा।

अन्त में श्री वोहरा ने कहा कि हमारी अंधूरी पड़ी बिल्डिंग को हमें जल्दी ही पूरा करने में सभी को सहयोग देना चाहिये ताकि हमारे बर्जुगों का सपना पूरा हो सके। बाद में प्रसाद वितरण किया। शान्तिः पाठ के साथ आज का कार्यक्रम समाप्त हुआ।

कोषाध्यक्ष
शान्ति भूषण शर्मा

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज औहरी चौक...

एस.एम.ओ. डा. संजीव महला, डा. रविन्द्र महाजन, डा. नरेन्द्र खुल्लर, एक्सीयन रमेश भाटिया, अशोक अग्रवाल अध्यक्ष गौशाला, कुलदीप महाजन, अरुण अग्रवाल, प्रो. अश्विनी कांसरा, प्रो.चड्ढा, प्रिंसीपल हरिकृष्ण महाजन, विक्रान्त, प्रिं. जतिन्द्र महाजन, प्रो. सोहन लाल, सी.एल. नारंग एडवोकेट, सुरिन्द्र कांसरा, वीरेन्द्र शर्मा, नरेन्द्र बुद्धिराजा, प्रिं. के.पी. महाजन, पार्षद सुखदेव महाजन, रमेश अग्रवाल, संजीव सानन, इन्दु सानन, अश्विनी अरोडा, टिकूं शर्मा के अतिरिक्त आर्य समाज व शिक्षण संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

इससे एक दिन पूर्व आर्य समाज द्वारा नगर में गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. स्वतंत्र कुमार जी की अगुवाई में एक विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया जिसमें सैंकड़ों की संख्या में लोगों ने भाग लिया। यह शोभायात्रा औहरी गेट से शुरू होकर नगर के विभिन्न भागों से होती हुई किला मंडी में समाप्त हुई। सारे रास्ते में कई स्थानों पर दुकानदारों ने शोभायात्रा रोक कर पुष्प वर्षा की। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे पश्चिमी सभ्यता का त्याग करके वैदिक परम्परा को अपनाए।

प्रविन्द्र चौधरी
प्रधान आर्य समाज

आर्य समाज फाजिल्का का 116वां वार्षिक उत्सव एवं नवसम्वत मनाया गया

आर्य समाज फाजिल्का का 116वां वार्षिक उत्सव एवं नवसम्वतसर मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रांगण में हवन यज्ञ करते हुये आर्य जन जबकि चित्र दो में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी को सम्मानित करते हुये आर्य समाज फाजिल्का के संरक्षक श्री सुशील वर्मा जी, उनके साथ खड़े हैं आर्य समाज के प्रधान श्री नवदीप जसूजा।

आर्य समाज एवं स्त्री आर्य समाज फाजिल्का के तत्वावधान में आर्य समाज स्थापना दिवस नवसम्वतसर एवं 116 वाँ वार्षिक उत्सव (स्थापित वर्ष 1902) बड़े हर्षोउल्लास एवं उत्साहपूर्वक दिनांक 17 एवं 18 मार्च 2018 को श्री प्रेम भारद्वाज जी महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम के पहले दिन भजन सन्ध्या का आयोजन किया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी ने भजनों के माध्यम से उपस्थित जनों को आत्म विभोर किया। इस सभा के मुख्यातिथि श्री नवदीप चावला Managing Director, Psycotropic India Ltd. (Pharmacenitical Company) थे तथा विशिष्ट अतिथि डा. अनुराग असीजा, प्रिसीपल डी.ए.वी.बी.एड. कालेज फाजिलका थे। श्री सत्य स्वरूप पुन्छी, मन्त्री आर्य समाज फाजिलका ने सभी का स्वागत किया तथा धन्यवाद स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती इन्दु भूसरी द्वारा किया गया। वास्तव में यह एक यादगार सन्ध्या रही जिसे सभी महानुभावों ने भजनों का आनन्द लिया तथा स्वामी दयानन्द जी के प्रति निष्ठा स्थापित की।

18 मार्च रविवार का कार्यक्रम ध्वजारोहण से प्रारम्भ हुआ। जिसमें संरक्षण डा. सुशील वर्मा, प्रधान डा. नवदीप जसूजा, संरक्षिका श्रीमती सुदेश नागपाल, प्रधाना श्रीमती इन्दु भूसरी, पुरोहित प्रेम नारायण विद्यार्थी, श्री रविन्द्र रंगबुल्ला, श्रीमती सरोज घिरानी, मलोट से श्री ब्रह्मदत्त जी आर्य, अबोहर के प्रो. फुटेला जी, श्री राजेश भूसरी, आर्य मुनि जी एवं अन्य गणमान्य उपस्थित थे। तत्पश्चात् ग्यारह कुण्डीय हवन यज्ञ पुरोहित श्री प्रेम नारायण जी विद्यार्थी के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के ग्यारह यजमानों श्री नवदीप चावला श्री सौरभ कमरा, डा. विजय सचदेवा की माता जी, श्रीमती पुष्पा दुरेजा, श्री अरुण झांव आर्य, श्री सुभाष कटारिया, श्री राजेश भूसरी, श्री नरेश सचदेवा, चि. दक्ष एवं आयु. नम्या, अग्रवाल युवा मंच, एवं फाजिलका योग मंच द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ।

यज्ञोपरान्त श्री प्रेम भारद्वाज, महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर के करकमलों द्वारा आर्य समाज के सभागार के फर्श के नवीनीकरण को लोकार्पण किया गया, इस के लिए श्री नवदीप चावला जी ने सात्विक दान 1,00,000/रु प्रदत्त किए थे। चावला जी जो कि प्रो. V.N. Chawla (D.A.V. College Jalandhar), Principal at Abohar and Bathinda Director, D.A.V. Managing Committtee) के सुपुत्र हैं।

इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डा. रेणु धूड़िया एवं श्री कंवल धूड़िया जी थे। आगे उत्सव की श्रृंखला में श्री जगत वर्मा जी, संज्ञीतज्ञ एवं भजनोपदेशक ने आर्य समाज विचारधारा, महर्षि दयानन्दप्रति कृतज्ञता एवं राष्ट्र भक्ति के भजनों द्वारा अपने सन्देश बहुत ही सुचारू रूप से जन जन में प्रसारित व प्रवाहित किए।

सभी याज्ञिकों को सम्मानित किया गया। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री प्रेम भारद्वाज जी महामन्त्री पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा में जहां आर्य समाज स्थापना दिवस, नवसम्वत्सर, व वार्षिक (**शेष पृष्ठ 7 पर**)

आर्य समाज औहरी चौक बटाला में आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। चित्र एक में हवन यज्ञ करते हुये आर्य जन एवं चित्र दो में शोभायात्रा निकाले जाने से पूर्व आर्य जन।

सृष्टि स्थापना दिवस, विक्रमी सम्वत् 2075 व आर्य समाज स्थापना दिवस आर्य समाज मंदिर औहरी चौक बटाला में बड़ी श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस उपलक्ष्य में आर्य महिला क्राफ्टस स्कूल में 31 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन पंडित विजय कुमार शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में किया गया जिसमें सैंकड़ों की संख्या में नगर की विभिन्न धार्मिक, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने पवित्र वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ विश्व कल्याण, विश्व शान्ति और निरोगी जीवन की कामना को लेकर यज्ञ में आहुतियां प्रदान की। यज्ञ की महिमा का वर्णन करते हुये श्री शास्त्री जी ने कहा कि आदिकाल से ही हमारे ऋषि मुनि, हमारे पूर्वज इसी माध्यम से न केवल अपनी पूजा अर्चना करते थे बल्कि विज्ञान के भी कई अनुसंधान इसी माध्यम से करते थे मगर बड़े दुख की बात है कि महाभारत काल के बाद हम इसे भूल गये जिसे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके पुनः इस परम्परा को जीवित किया। यज्ञ से पूर्व आर्य समाज के संरक्षक श्री जतिन्द्र नाथ शर्मा ने ओ३म ध्वज लहरा कर इस कार्यक्रम को शुरू किया और उन्होंने बड़े ही मार्मिक शब्दों में उपस्थित जनसमूह से अपील की कि हमें पश्चिमी सभ्यता का त्याग कर अपनी प्राचीन वैभवशाली संस्कृति को अपना कर अपने घरों में पुनः स्वर्ग जैसा माहौल बनाना होगा ताकि हम सुखी जीवन व्यतीत कर सकें।

इस अवसर पर दैनिक प्रार्थना सभा के संचालक महाशय गोकुल चंद जी ने सभी को नव वर्ष की बधाई दी और उपस्थित जनसमूह के लिये मंगलकामना की। इस यज्ञ में भाग लेने वालों में (**शेष पृष्ठ 7 पर**)

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।